सर्वोदय संस्कृति के अमर गायकः पं. बल्देव प्रसाद मिश्र

डॉ. लालचंद सिन्हा

(सहा. प्राध्या.हिंदी)
शास. नवीन महा. ठेलकाडीह,
जिला राजनांदगांव (छ.ग.)

भारतीय इतिहास में स्वाधीनता आंदोलन एक युगांतकारी घटना है। यह केवल राजनीतिक स्तर पर ही नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर व्यापक थी। स्वाधीनता आंदोलन के इस ऐतिहासिक युगांतकारी घटना ने भारतीय समाज में प्रखर आत्म–सजगता और सामाजिक –सांस्कृतिक आत्मबोध को पुनर्जागृत किया। पददलित जनमानस की आत्मशक्ति झंकृत हो उठी ऐसे समय में गांधी जी के पदार्पण के संदर्भ में पं.नेहरू जी 'डिस्कव्हरी ऑफ इण्डिया' में लिखते हैं – '' गांधी जी ताजी हवा के उस प्रबल प्रवाह की तरह थे जिसने हमारे लिए पूरी तरह फैलना और गहरी सांस लेना संभव बनाया। वह उस रोशनी की उस किरण की तरह थे, जो अंधकार में पैठ गई और जिसने हमारी आंखों के सामने से परदे को हटा दिया।..... गांधी जी ऊपर से आये हुए नहीं थे, बल्कि हिन्दुस्तान के करोड़ो आदमियों की आबादी में से ही उपजे थे। उन्होंने कहा कि तुम लोग , जो किसानों और मज़दूरों के शोषण पर गुज़र करते हो उनके ऊपर से हट जाओ,उस व्यवस्था को, गरीबी और तकलीफ की जड़ है, दूर करो। तब राजनैतिक आजादी की एक नई शक्ल सामने आई और उसमें एक नया अर्थ पैदा हुआ।'' 1

स्वाधीनता आंदोंलन को जन आंदोलन का व्यापक रूप देने के लिए गांधी देश के कोने कोने में दौरा कर आंदोलन की प्रगति की जानकारी लिया करते थे। गांधी जी जब भी रायगढ़,छत्तीसगढ़ मार्ग से यात्रा किया करते, रायगढ़ रेल्वे स्टेशन पर एक युवक उनसे मिलने अवश्य जाया करता था। वह युवक और कोई नहीं, रायगढ़ का प्रसिद्ध दीवान पं.बल्देव प्रसाद मिश्र था। पं. मिश्र जी के कैशोर्य मन को गांधी के विचारों ने बहुत गहरायी तक प्रभावित किया था। गांधी जी के सत्य और अहिंसा को अपने जीवन का परम ध्येय माना। गांधी जी के विचारों के अंगीकार कर जीवन पथ पर आजीवन चल पड़े। सन् 1936 में नागपुर में आयोजित प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का सफल संचालनकर्ता मिश्र जी थे। इसी सम्मेलन में गांधी जी के साथ उनकी पहली मुलाकात हुई थी। इसी सम्मेलन में उन्हें पं.जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, राजेन्द्र प्रसाद, मुंशी प्रेमचंद, पं. बालकृष्ण शर्मा नवीन प्रभृति मनीषियों से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

संस्कारधानी राजनांदगांव में कुलीन ब्राह्मन परिवार में जन्में पं. बल्देव प्रसाद मिश्र जी का मानवीय दृष्टिकोण राष्ट्र की परिसीमाओं के बंधन से मुक्त सकल विश्व के कल्याण के लिए व्यापक था। 'वसुधैव कुटुंबकम्', 'सर्व खल्विद ब्रह्म' और सर्वे भवन्तु सुखिनः के पुरातन आदर्शों को उन्होंने अपना जीवनादर्श माना। इसी जीवनादर्श ने उन्हें सर्वोदय संस्कृति का अमर गायक बना दिया। सर्वोदय का आदर्श है अद्वैत और उसकी नीति है समन्वय। जगत में व्याप्त मानवीय विषमता का अंत कर समता की स्थापना करना सर्वोदय का उद्देश्य है। सर्वोदय कहता है ''तुम दूसरों को जिलाने के लिए जियो। सर्वोदय ऐसे वर्गविहीन, जाति विहीन और शोषण मुक्त समाज की स्थापना करना चाहता है कि जिसमें सभी को अपना सर्वांगीन विकास का सुअवसर मिले। सर्वोदयी कवि पं.बल्देव प्रसाद मिश्र जी '' साकेत संत'' महाकाव्य में राम को अखिल विश्व रूप मानकर लिखते हैं –

''स्वामी एक राम है, उन्हीं का धाम विश्व यह
जन में जनार्दन की ज्योति, नित्य जागी है।
तीव्र अनुभूति इस भांति जिसकी है हुई।
नश्वर जगत में वही तो बड़ भागी है।'' 2

सर्वोदय कोई वाद या संप्रदाय न होकर पूर्णतः भारतीय चिंतन और जीवन दर्शन का पर्याय है। इसमें मानव सेवा, एकता तथा समरसता की समग्र भावना है। मिश्र जी ने लिखा है –'' सर्वोदय से हमारा तात्पर्य एक मात्र उस समाज से नहीं है जो इस वर्धा में सर्वोदय समाज के नाम से विराजमान है। हम मानव जीवन और मानव समाज के संतुलित विकास को ही सर्वोदय मानते हैं और इस संबंध में सर्वोदय सिद्धांत से हमारा अभिप्राय उन सिद्धांतों से, जिन्हें महात्मा गांधी ने अपने जीवन में स्थिर किया।'' 2 (वही पृ. 127)

सर्वोदय का अर्थ है सबका उदय और सब प्रकार से उदय। जिस अर्थ में सर्वोदय की आधारशिला गांधी जी ने रखी है उसका मूल उत्स रस्किन द्वारा रचित ग्रंथ ' अन टू दिस लास्ट' है। इस ग्रंथ का मूलोद्देश्य सबका उत्कर्ष करना है। मिश्र जी सर्वोदय विचार वीथी के पथिक हैं। उनका मानना है कि जीवन का उत्कर्ष मानव सेवा और उसके उत्थान में अपने जीवन के समर्पण में है। 'परहिम सरिस धरम नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं दुख अघ माही।' तुलसी की यह पंक्ति सर्वोदयी जनों के लिए जीवन दृष्टि है। मिश्र जी गोस्वामी तुलसीदास से अत्यन्त ही अभिभूत थे। ''उदात्त संगीत'' जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण दृष्टव्य है –

'' जीवन क्या जिसमें तिरकर,
सौ– सौ ज्योंते बुझ जावें।
जीवन वह जिस पर तिरकर ,
लाखों दीपक लहराये।। 3 (वही पृ. 87)

सर्वोदयी मिश्र जी का मत है कि समाज के कल्याण में ही व्यक्ति का कल्याण है। इसलिए साहचर्य पूर्ण विकास ही जीवन का आधार है। समता का भाव अत्यावश्यक है। श्रम को उचित मूल्य और महत्ता मिलना ही चाहिए। समाज में सभी भय मुक्त हो, सामर्थ्यवान हो और समाज में सबको अपना विकास करने की स्वतंत्रता हो। किसी स्तर पर भेद न हो । सर्वोदय विचार दृष्टि में वकील या नाई दोनों के काम का मूल्य बराबर है। पसीना बहाकर रोटी खाना ही यज्ञ है। गांधी जी ने आजादी के आदोंलन का जन आंदोंलन बनाने के लिए जन मानस को निर्भयता का संदेश दिया था। पं. नेहरू जी लिखते हैं – हमारी प्राचीन पुस्तकों में कहा गया था कि किसी आदमी या राष्ट्र के लिए सबसे बड़ा उपहार है अभय–निर्भयता।.... लेकिन ब्रिटिश राज्य के अंदर हिन्दुस्तान में जो सबसे अहम लहर थी उसमें डर –कुचलने वाला, दम घोटने वाला मिटा देने वाला ...डर था। चारों तरफ समाये हुए ...डर के ही ख़िलाफ गांधी की शांत किंतु दृढ़ आवाज उठी–''डरो मत ।''4

मिश्र जी ने अपने काव्यों के माध्यम से जनमानस को निर्भयता का संदेश दिया। तत्कालीन समाज में व्याप्त अंग्रेजी सत्ता आतंक और भय के विरूद्ध खड़ा होने का आह्वान किया। उनकी उत्कट कामना है कि सभी जन निर्भय हो, साहसी हो, श्रमशील हो और दीन हीन के प्रति रक्षा का भाव हो। मिश्र जी लिखते हैं –

''अभय हो सभी, शक्त हों सभी,
न कोई कहीं हों लोग।
राज्य से खुले रहे सब ओर,
अशक्तों की रक्षा के योग,
योग्यता पर सब ही श्रम करे,
और आवश्यकता पर प्राप्ति।'' 5(वही पृ. 107)

मिश्र जी ने गांधी जी के राम राज्य की परिकल्पना को अपने महाकाव्य 'राम राज्य' में वर्ण्य विषय बनाया है। गांधी जी का ऐसा राम राज्य जिसमें भय और शोषण न हो, अन्याय न हो, छल,कपट और द्वेष न हो। सबको विकास का सुअवसर मिले। सर्वत्र बंधुत्व और प्रेम का वातावरण हो। सत्य और अहिंसा धर्म और व्रत के समान पालन हो। जहां किसी भी प्रकार से भेद न हो। राज्य सत्ता, धर्मसत्ता, अर्थसत्ता और बौद्धिकसत्ता का समन्वय करके सर्वोदय दर्शन की स्थापना हो। राम राज्य के आदर्श को वर्तमान में स्थापना करना चाहते हैं। सत्तातंत्र न्याय विधान का अनुगामी हो। राम राज्य के आदर्श को स्वीकार सर्वत्र समृद्धि हो। समाज से अन्याय, शोषण, आतंक और हिंसा रूपी रावण का अंत हो। मिश्र जी वर्तमान में रामराज्य की स्थापना की कामना करते हुए लिखते हैं–

''त्रेता का राम राज्य वह, कलयुग को आलोक दिखाये।

जिसकी प्रबल प्रेरणा पाकर , शासन स्वप्न सत्य बन जाये।
भारत की सीता समृद्धि को, रावण से मुक्त कराकर।
खिल जाये, रामत्व मनुज का, ऐसा योग रचे विश्वेश्वर।।' '6 (वही पृ. 110)

पं. मिश्र जी ने ' भारतीय संस्कृति ' नामक अपने ग्रंथ के अष्टम परिच्छेद में सर्वोदय काल के अंतर्गत गांधीदर्शन और सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति अपने विचार सजगता के साथ प्रस्तुत किया है। सर्वोदय संस्कृति के मूल आधार विषय पर वे लिखते हैं –
''राष्ट्र या जाति या व्यक्ति सभी को अधिकार है।
जिये और फले– फूले अविरोधी प्रकार से।।'' 7 (वही पृ. 110)

गांधी जी गांधीवाद और सर्वोदयवाद शब्द के कभी भी आग्रही नहीं रहे। किंतु गांधीवाद और सर्वोदय, गांधी जी की जीवनदृष्टि का पर्याय है। सर्वोदयी का पूर्ण ध्येय साध्य की प्राप्ति हेतु साधन की शुचिता पर है। मिश्र जी गांधी जी की जीवनदृष्टि से अति प्रभावित थे। उनके चिंतन,दर्शन और कार्यव्यवहार में गांधी जी की छवि स्पष्टया दिखायी पड़ती है। जब तक साधन पवित्र नहीं होगा हम साध्य को प्राप्त नहीं कर पायेंगे। सत्य रूपी साध्य की प्राप्ति अहिंसा रूपी साधन से ही प्राप्त किया जा सकता है। सत्य और अहिंसा का बोध अपनी संपूर्ण व्यापकता के साथ होना चाहिए। मन,वाणी और कर्म की पवित्रता के साथ जीवन पथ पर चलना सर्वोदयी के लिए अनिवार्य है। सर्वोदय के मार्ग के पथिकों का आह्वान करते हुए वे लिखते हैं–
''गांधी का गुणगान करें वाणी शुचि होले,
गांधी पर अभिमान करे प्राणी शुचि होले।
गांधी से सप्राण, प्राण बन जायें हमारे,
गांधी जी हो जायें मनुजता के ध्रुव तारे।।'' 8 (वही पृ. 128)

मिश्र जी समाज में व्याप्त अन्याय, शोषण, हिंसा विषमता, और स्वार्थपरता से व्याकुल थे। इसके स्थान पर वे सच्चे सर्वोदयी का परिचय देते हुए समाज में सत्य,अहिंसा प्रेम,बंधुत्व और समता जैसी मानवीय उदात्त मानवीय मूल्यों की प्रतिस्थापना करना चाहते। उनकी लालसा स्वावलंबी और आत्मनिर्भर समाज स्थापित होते देखने की थी। मानवता का सूर्य विश्व गगन पर चमकाना चाहते थे –
''दानवता का दुर्ग उसे ही ढाना होगा,
मानवता का सूर्य , उसे चमकाना होगा।'' 9 (वही पृ. 129)

निष्कर्षः

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी 'संस्कृति के चार अध्याय' में लिखते हैं– महापुरूषों के संकेत पर इतिहास अपना रूप बदलता है। दिनकर जी उक्त पूर्णतः सत्य है। गांधी जी अपने सत्य और अहिंसा के दर्शन से भारत ही नहीं वरण् संपूर्ण विश्व को नई जीवन दृष्टि प्रदान किया । जिसका प्रभाव जन मानस पर व्यापक पड़ा। उनका सर्वोदय आंदोलन वस्तुतः जीवन दर्शन है। उनके इस जीवन दर्शन से पं. मिश्र जी अनुप्राणित थे। उनके महाकाव्यों में सर्वोदयी जीवन बोध पूर्णता के साथ मुखरित है। मिश्र जी पर गांधी का इतना प्रभाव था कि रायगढ़ रियासत के वैभवपूर्ण दीवान पद पर आसीन होने के पश्चात भी वे गांधी जी के सर्वोदयी मार्ग से कभी भी नहीं डिगे। न विचार से और न ही जीवन शैली से। वे राजा जनक की भांति विदेह थे। वे तन और मन दोनों से सच्चे संत थे। गांधी जी के परम अनुयायी और उनके सर्वोदय संस्कृति अमर गायक थे।

आधार ग्रंथ : डॉ. बल्देव प्रसाद मिश्र : लेखक– गणेश शंकर शर्मा , छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी ,रायपुर

संदर्भ सूची :

1. हिंदुस्तान की कहानीः लेखक – जवाहर लाल नेहरू, प्रकाशन – सस्ता साहित्य प्रकाशन पृ. 415
2. डॉ. बल्देव प्रसाद मिश्र : लेखक– गणेश शंकर शर्मा , छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी ,रायपुर पृ.105
3. वही पृ. 87
4. वही पृ. 107
5. वही पृ. 110
6. वही पृ. 128
7. वही पृ. 129